L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A - PART-I
PAPER - I
Psychology (Honours)
TOPIC:- intelligence, theory of intelligence.

Dr. PRAMOD KUMAR SAHU
Assist. professor.
Guest Teacher.
V.S.J. college, RAJNAGAR
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumardbg2018@gmail.com.

Q. बुद्धि का अर्थ बतायें, बुद्धि के सिद्धान्तों की व्याख्या करें।

नवीन परिस्थितियों के साथ समायोजन की योग्यता ही बुद्धि है। बुद्धि वह शक्ति है। जिसके द्वारा हम नवीन परिस्थिति में उपयुक्त रूप से संतुलन करने के लिए व्यवहार का समायोजन करते हैं। एक व्यक्ति उसी अनुपात में बुद्धि रखता है, जिस अनुपात में वह अपने वातावरण में समायोजित होने की प्रक्रिया सीख चुका है।

फ्रीमैन (1925) के अनुसार, शीघ्र अधिगम या अधिगम क्षमता की योग्यता ही बुद्धि है, अमूर्त चिन्तन की योग्यता ही बुद्धि है। बुद्धि उन समस्याओं को हल करने की योग्यता है। जिसमें भाव और प्रतीक के उपयोग की आवश्यकता होती है, जैसे शब्द, अंक, रेखाचित्र, समीकरण सूत्र, आदि। मानव की बुद्धि के कारण ही सर्वश्रेष्ठ प्राणी समझा जाता है। प्रकृति ने समाज को एक ऐसा रूप दिया है। जिसमें वैयक्तिक भिन्नताएँ पायी जाती है। ये वैयक्तिक भिन्नताओं की प्रमुख कारण बुद्धि के विभिन्न स्तर हैं। कुछ व्यक्ति जन्म से ही प्रखर बुद्धि वाले अथवा मूर्ख हुआ करते हैं। प्रखर बुद्धि वाले बालक मूर्ख बालकों की अपेक्षा शिक्षा के क्षेत्र में अधिक आगे रहते हैं। हम कह सकते हैं कि बुद्धि वंशानुक्रम पर आधारित होती है। इसके और इसके विकास के लिए उपयुक्त वातावरण भी आवश्यक होती है। बुद्धि को हम प्रत्यक्ष रूप से नहीं देख सकते हैं। लेकिन उसके प्रभावों को हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। बुद्धि एक कल्पनात्मक शक्ति है। मनोविज्ञान में बुद्धि के स्वरूप के संबंध में मतभेद है। लेकिन सभी विद्वानों ने बुद्धि के अस्तित्व को स्वीकार किया है। वैश्लर (1944) के मतानुसार :- बुद्धि व्यक्ति की शक्तियों का वह समूह है।

जिससे वह उद्देश्य सहित कार्य कर सके। विवेकपूर्ण चिन्तन कर सके तथा वातावरण के साथ प्रभावपूर्ण संतुलन स्थापित कर सके। बुद्धि एक विशेष प्रकार की योग्यता एवं योग्यताओं का समीकरण है। जिसकी सहायता से व्यक्ति विवेकपूर्ण चिन्तन कर सकता है एवं स्थिति के प्रकार की उद्देश्यपूर्ण क्रियाएं कर सकता है एवं नवीन परिस्थितियों में प्रभावपूर्ण समायोजन कर सकता है। बुद्धि शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया गया है समस्त मानसिक योग्यता बुद्धि है। इसके द्वारा उद्देश्यपूर्ण व्यवहार करने में सहायता मिलती है, इसके द्वारा व्यवहार में नवीनता तथा मौलिकता की उत्पत्ति होती है, विभिन्न प्रकार के कार्यों में सहायक है। इससे व्यवहार में नम्यता आती है। यह एक जन्मजात योग्यता है। बुद्धि में अनेक तत्व पाये जाते हैं।

बुद्धि के सिद्धांत का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार है।

(i) एक-कारक सिद्धांत :- एक कारक सिद्धांत के प्रतिपादक बिने हैं। इस सिद्धांत को टर्मन और स्टर्न जैसे मनोवैज्ञानिकों ने अपना समर्थन प्रदान किया है। इन मनोवैज्ञानिकों की मान्यता है कि बुद्धि एक अविभाज्य इकाई है। इस सिद्धांत के अनुसार सम्पूर्ण बुद्धि एक समय में सक्रिय होकर एक प्रकार के विशेष कार्य को पूर्ण करती है। इन मनोवैज्ञानिकों का यह भी मत है कि बुद्धि वह मानसिक शक्ति है जो व्यक्ति के समस्त मानसिक कार्यों का संचालन करती है और व्यक्ति के समस्त व्यवहारों को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करती है।

(ii) द्वि-कारक सिद्धांत :- द्वि-कारक सिद्धांत का प्रतिपादन स्पीयरमैन ने किया है। इनके मतानुसार बुद्धि के दो कारक है दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि सभी प्रकार के मानसिक कार्यों में दो प्रकार की मानसिक योग्यताओं की आवश्यकता होती है। सामान्य मानसिक योग्यता, विशिष्ट मानसिक योग्यता सामान्य मानसिक योग्यता सभी प्रकार के मानसिक कार्यों में पायी जाती है लेकिन विशिष्ट मानसिक योग्यता केवल विशेष कार्यों को पूर्ण करने से ही संबंधित होती है सामान्य विशेषताओं के साथ-साथ प्रत्येक व्यक्ति में कुछ न कुछ विशेष बौद्धिक योग्यताएं भी पायी जाती हैं यह बौद्धिक योग्यताएं विभिन्न व्यक्तियों में और स्थिति में एक से अधिक भी हो सकती है।

Scanned with CamScanner

III

एक व्यक्ति में सामान्य योग्यता है जितनी ही अधिक होती है वह उतना ही अधिक बुद्धिमान माना जाता है।
स्पीयरमैन का यह द्वि-कारक सिद्धांत भी आलोचना से मुक्त नहीं रह सका है। विशिष्ट योग्यता के अंगों का पूर्ण रूप से स्वतंत्र होना उचित नहीं है।

(iii) प्रतिदर्श सिद्धांत :- इस सिद्धांत के प्रतिपादक थामसन महोदय हैं। थामसन ने अपने प्रतिदर्श सिद्धांत का प्रतिपादन स्पीयरमैन के द्वि-कारक सिद्धांत के विरोध में किया था। थामसन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि व्यक्ति का बौद्धिक व्यवहार अनेक स्वतंत्र योग्यताओं पर निर्भर करता है। लेकिन इन स्वतंत्र योग्यताओं का क्षेत्र सीमित होता है। बुद्धि परीक्षण के समय एक विशिष्ट प्रतिदर्श ही सामने आता है। भिन्न-भिन्न बुद्धि परीक्षणों में बौद्धिक तत्वों के भिन्न-भिन्न प्रतिदर्श ही सामने आते हैं। विभिन्न शैक्षणिक और बौद्धिक परीक्षणों में भी धनात्मक सह-संबंध पाये जाते हैं। वह विभिन्न प्रतिदर्शों के द्वारा ही स्पष्ट होते हैं। थामसन का मानना है कि इनके बौद्धिक परीक्षणों में G- Factor नहीं पाया जाता है।

(iv) पदानुक्रमिक सिद्धांत :- बर्ट अथवा वर्नन ने बुद्धि के इस नये सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए मानसिक योग्यताओं को क्रमिक महत्व प्रदान किया है। वर्नन ने सबसे अधिक महत्व सामान्य योग्यताओं को दिया है। इस सामान्य मानसिक योग्यता को दो भागों में विभाजित किया है
(i) क्रियात्मक-यांत्रिक शारीरिक (ii) शाब्दिक शैक्षिक-परीक्षण दोनों कारकों के आगे क्रम में विशिष्ट मानसिक योग्यताओं से क्रमिक महत्व का सिद्धांत भी कहा जाता है।

(v) गिलफोर्ड :- इस सिद्धांत के प्रतिपादक गिलफोर्ड हैं। गिलफोर्ड ने तीन प्रधान मानसिक योग्यताओं के आधार पर बुद्धि की संरचना की व्याख्या की है।
(i) operations अर्थात चिंतन की क्रियाएं (ii) contents अर्थात वह पद जिनके संबंध में चिंतन किया जाता है, शाब्दिक या संकेत (iii) Product यानी अर्थात वह विचार जो चिंतन के पश्चात उत्पादन के रूप में आते हैं।

(vi) समूह कारक सिद्धांत :- इस सिद्धांत का प्रतिपादन थर्स्टन ने किया है। इस सिद्धांत में थर्स्टन बुद्धि को कई तत्वों का योग मानता है। इसके अनुसार विभिन्न बौद्धिक योग्यताओं का समूह अथवा समन्वय ही बुद्धि का स्वरूप है।

Scanned with CamScan

थर्स्टन का यह सिद्धांत बुद्धि का एक अति महत्वपूर्ण एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धांत है। थर्स्टन ने सर्वप्रथम सिद्धांत को विकसित किया। थर्स्टन के इस सिद्धांत को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई। इस सिद्धांत में उन्होंने G और S कारकों की उपस्थिति को स्वीकार नहीं किया है G और S कारकों की अपेक्षाकृत उन्होंने समूह कारकों को अधिक महत्व प्रदान किया है।

थर्स्टन के अनुसार जिन विभिन्न योग्यताओं से बुद्धि की रचना होती है उन्हें मौलिक योग्यताएँ कहा जाता है। उन्होंने अपने कारक विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित मौलिक मानसिक योग्यताओं का पता लगाया है।

(i) प्रत्यक्षीकरण की योग्यता :- प्रत्यक्षपरक योग्यता के द्वारा व्यक्ति विभिन्न वस्तुओं की पहचान एवं उनका प्रत्यक्षीकरण करता है जैसे - पहेली, चित्रों के पत्ते, आकृतियों की पहचान आदि।

(ii) वाचिक योग्यता :- वाचिक योग्यता वह है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने विचारों व अनुभवों को दूसरों को बताता व समझाता है एवं अपनी भावनाओं को दूसरे व्यक्ति के सामने पर व्यक्त करता है।

(iii) शाब्दिक योग्यता :- शाब्दिक योग्यता के द्वारा व्यक्ति चिन्तन करता है। थर्स्टन ने इसकी शाखा में दो प्रकार की योग्यताओं का वर्णन किया है।

(iv) तार्किक योग्यता :- तार्किक योग्यता के द्वारा व्यक्ति अमूर्त शब्दों का प्रत्यक्षीकरण करके उसका उपयोग करता है। तार्किक योग्यता के आधार पर व्यक्ति अपने पुराने अनुभवों के आधार पर विचारों को व्यक्त करता है व नये अनुभवों व क्रियाओं की रचना भी करता है।

(v) संख्यात्मक योग्यता :- यह योग्यता वह है जिसके द्वारा व्यक्ति संख्यात्मक गणितीय कार्य को करता है वह गणितीय कार्य है जोड़ना, घटाना, गुणा, भाग आदि।

(vi) वस्तु प्रेक्षण योग्यता :- इस योग्यता के द्वारा व्यक्ति दृश्यों का प्रत्यक्षीकरण करता है व उनके संबंधों को समझता है। उदाहरण - ज्यामितीय समस्याएँ आदि।

Dr. Pramod Kumar Sahu
Date - 27/04/2020

Scanned with CamScan